International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2017; Page No. 44-45

हिंद स्वराज : कुछ तथ्य

डॉ0 बृजेन्द्र कुमार अग्निहोत्री

हिंदी विभाग, सिक्किम विश्वविद्यालय, 5 मील, गंगटोक, सिक्किम भारत।

प्रस्तावना

हिंद स्वराज पुस्तक के माध्यम से गांधीजी ने स्वराज की अवधारणा प्रस्तुत की है। यह सर्वप्रथम दक्षिण अफ्रीका से प्रकाशित होने वाले साप्ताहिक 'इण्डियन ओपीनियन' में लेखमाला के रूप में प्रकाशित हुई। यह मूलतः गुजराती में लिखी गई, बाद में अंग्रेजों को इस पुस्तक के विचारों से वाकिफ करने के लिए गांधीजी ने इसका अनुवाद अंग्रेजी में किया। 'हिंद स्वराज' के माध्यम से गांधीजी ने आदर्श जीवन–दर्शन की जो अवधारणा दी है, उसके मूल में भारतीय संस्कृति दिखाई पड़ती है और साथ में टॉलस्टाय भी। टॉलस्टाय की उपस्थिति की बात पर कुछ लोग चौंक सकते हैं, उनके लिए इस घटना का उल्लेख आवश्यक है– ''1908 ई. में गांधीजी ने टॉलस्टाय को पत्र लिखा। टॉलस्टाय के लिए गाँधी अपरिचित थे। उसी समय भारतीय क्रन्तिकारी तारकनाथ दास ने भी टॉलस्टाय को पत्र भेजा। इस पत्र में हिंसा की वकालत थी। जवाब में टॉलस्टाय ने लगभग 400 पृष्ठ लिख डाले और वह पत्र गाँधी के पते पर भेज दिया। दास वहीं कनाडा में ही रहते थे। गांधीजी ने टॉलस्टाय को पत्र लिखकर इस लम्बे पत्र को छापने की अनुमति मांगी। वह मिली। गाँधी ने 'एक हिन्दू के नाम पाती' का गुजरती अनुवाद किया और उस अनुवाद की भूमिका में लिखा कि इस 'पाती' का मूल सिद्धांत वही है, जो उनका है।''[1]

''इस पाती का अनुवाद और हिंद स्वराज की रचना एक साथ हुई। हिंद स्वराज गाँधी–गीता है, स्वयं गाँधी है, गाँधी के विचारों की आत्मा है। लन्दन से दक्षिण अफ्रीका लौटते हुए 1909 में 'किल्डोन केसल' नामक जहाज पर ये दोनों पुस्तिकाएं तैयार की। हिंद स्वराज के अंत में गाँधी ने टॉलस्टाय की छह पुस्तकों के नाम दिए और पाठकों को यह पाठकों को यह सुझाया कि यह सुझाया कि वे उन्हें पढ़ें।''[2] स्पष्ट है कि हिंद स्वराज के सृजन के समय गाँधी भारतीय जीवन–दर्शन के साथ टॉलस्टाय से भी प्रभावित थे, खासकर टॉलस्टाय के अहिंसा–दर्शन से। अहिंसा का प्रभाव हिंद स्वराज में ही क्यों, अहिंसा तो गाँधी का पर्याय ही बन गई है। गांधीजी की अहिंसा बलवानों की अहिंसा है। कायरता, भीरुता, कमजोरी और निष्क्रियता को गांधीजी अहिंसा नहीं मानते हैं, इन्हें वह 'छिपी हिंसा' करार देते हैं।

'हिंद स्वराज' गांधीजी द्वारा रचित सबसे पहली पुस्तक है। उनके सम्पूर्ण जीवनकार्य में जो श्रद्धा काम करती है, वह सारी इस पुस्तक में समाहित है। इसमें उन्होंने अपने मन के स्वराज की तस्वीर खड़ी की है। इसका मूल उद्देश्य हिंसावादी पथ के विकल्प में एक नए और ऊँचे शस्त्र का सुझाव देना है। वह शस्त्र है– सत्य और अहिंसा पर आधारित सत्याग्रह। गांधीजी के हिंद स्वराज को विनोबा ने ग्राम स्वराज, जयप्रकाश ने जनता सरकार और डॉ. लोहिया ने चौखम्भा राज कहा है। गांधीजी स्वराज को स्पष्ट करते हुए कहते हैं– ''स्वराज एक पवित्र शब्द है, इसका स्रोत वैदिक है, जिसका अर्थ आत्म–शासन और आत्म–संयम है।''[3]

गांधीजी जीवनभर स्वराज की लड़ाई लड़ते दिखाई देते हैं। वे इस बात को अच्छी तरह से जानते थे कि असली लड़ाई तो अपने तन–मन और परिवेश से लड़नी है। गांधीजी का हिंद स्वराज लोकमान्य तिलक का 'स्वराज्य' और रवीन्द्रनाथ के 'मनुष्य का देश' है। गांधीजी यह मानते थे कि उनके सपनों का स्वराज गरीबों का स्वराज्य होगा। जीवन की जिन अनावश्यक वस्तुओं का उपयोग अमीर करते हैं, वही गरीबों को भी सुलभ होनी चाहिए। उनके लिए प्रजातंत्र का अर्थ था कि इस तंत्र में नीचे से नीचे और ऊँचे से ऊँचे आदमी को आगे बढ़ने का सामान अवसर मिलना चाहिए। जिस तरह मनुष्य के शरीर के सारे अंग बराबर हैं, उसी तरह समाजरूपी शरीर के सारे अंग बराबर होने चाहिए। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के शब्दों में– ''शायद ही कोई राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, कृषि व श्रम सम्बन्धी औद्योगिक व अन्य समस्या ऐसी हो, जिस पर उन्होंने विचार न किया हो। व्यक्तिगत जीवन की छोटी–छोटी तफसीलों, आहार, पोशाक तथा दैनिक कामकाज से लेकर जातिप्रथा और अस्पृश्यता जैसी बड़ी–बड़ी समस्याओं तक भारतीय जीवन का शायद ही कोई ऐसा पहलू हो, जिसे उन्होंने प्रभावित नहीं किया और अपने सांचे में नहीं ढाला।'' [4]

हिंद स्वराज द्वेष–धर्म की जगह प्रेम–धर्म की सीख देती प्रतीत होती है। यह पुस्तक हमें भारतीय सभ्यता की ओर लौटने की सीख देती है और आधुनिक सभ्यता को पाश्चात्य सभ्यता से जोड़, इसे त्यागने के लिए प्रेरित करती है। गांधीजी के अनुसार– ''शरीर का सुख कैसे मिले, यही आज की सभ्यता ढूंढती है, और यही देने की कोशिश करती है। पैगम्बर मुहम्मद साहब की सीख के मुताबिक यह 'शैतानी सभ्यता' है। हिन्दू धर्म इसे निरा कलजुग कहता है।''[5] गांधीजी के अनुसार भारतियों की गुलामी का मुख्य कारण भी यही सभ्यता है– ''हिंदुस्तान अंग्रेजों से नहीं, बल्कि आजकल की सभ्यता से कुचला जा रहा है, उसकी चपेट में फंस गया है।''[6] गांधीजी इतने पर ही नहीं रुकते। वह हमें आत्म–बोध कराते हुए कहते हैं– ''हिंदुस्तान अंग्रेजों ने लिया सो बात नहीं है, बल्कि हमने उन्हें दिया है। हिंदुस्तान में वे अपने बल से नहीं टिके हैं, बल्कि हमने उन्हें टिका रखा है।''[7]

जीवनोपयोगी प्रयोगों पर आधारित अति उत्तम विचारों के प्रवर्तक गांधीजी की कृति 'हिंद स्वराज' में दायित्व–बोध की भावना पहले है और अधिकार बाद में। गांधीजी ऐसे संविधान का निर्माण करना चाहते थे, जिसमें हर प्रकार की गुलामी से मुक्ति का प्रावधान हो। गांधीजी ने हमें एक गुरुमंत्र दिया है– ''जब कभी आप संदेह और मोह में पड़ जाएँ तो यह कसौटी लगा लीजिये– उस गरीब से गरीब और कमजोर से कमजोर आदमी का ध्यान कीजिये, जिसे आपने कभी देखा हो और अपने आपसे पूछिए कि जो कदम आप उठाना चाहते हैं, उसका उस पर क्या असर होगा? उसे कुछ लाभ होगा? उसे अपने जीवन को सुधारने और ऊपर उठाने में कुछ सहायता मिलेगी?''[8] अगर दूसरे शब्दों में कहें तो– क्या उससे भूख और आध्यात्मिक भोजन के आभाव में जो तड़प रहे हैं, क्या उनका स्वराज एक कदम भी पास आएगा? और इसके बाद हमें अहसास होगा कि हम सारे संदेहों और मोह से मुक्ति पा गए हैं। 'हिंद स्वराज' के मूल में अहिंसा और सत्य पर आधारित सत्याग्रह है। गांधीजी ने सत्याग्रही व्यक्ति के लिए चार मूलभूत नियमों को अनिवार्य बताया है– ''उसे ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए, गरीबी

अपनानी चाहिए, सत्य का पालन करना और हर हालत में अभय बनना चाहिए।''[9] केवल अंग्रेजों को देश से बाहर कर, अंग्रेजी शासन से मुक्ति पाना ही 'स्वराज' नहीं है। गांधीजी के अनुसार– ''अपने मन का राज्य 'स्वराज' है। उसकी कुंजी सत्याग्रह, आत्मबल या करुणाबल है। उस बल को आजमाने के लिए स्वदेशी को पूरी तरह आजमाने की जरूरत है।''[10]

'हिंद स्वराज' में गांधीजी ने ब्रिटिश संसदीय प्रणाली, महीनिकरण, आधुनिकीकरण सहित उन सभी जीवनशैलियो का विरोध किया है, जो व्यक्ति को समानता के अधिकार से वंचित कर अकर्मण्यता की ओर धकेल वास्तविक 'स्वराज' से दूर करने में माध्यम की भूमिका निभाती है। इसको लेकर कई बार अपने निकटस्थ लोगों से इनके वैचारिक मतभेद भी हुए। गांधीजी मानते थे कि जिस चीज की अच्छाई आप लेते हैं, उसकी बुराईयों को आप दूर नहीं रख सकते अर्थात जो भी आप स्वीकार करते हैं, वह एकमुश्त–सौदा (पैकेज–डील) होता है। उसमें अच्छाइयां भी होंगी और बुराइयां भी होंगी। ''पं. जवाहरलाल नेहरू गलती से यह समझते थे कि हम दुनिया भर की अच्छाईयां ले लें और बुराइयां छोड़ दें। उसका परिणाम यह हुआ कि दुनिया भर की बुराइयां तो आ गयीं, अच्छाईयां हमारे यहाँ नहीं आ सकीं। इसका असर आप अर्थव्यवस्था में देख सकते हैं, राजनीति में देख सकते हैं, हमारी समाज–रचना में देख सकते हैं।''[11]

नया संविधान बनाने के लिए जो संविधान सभा 1946 ई. के अंत में बनी, उसका ध्यान आरम्भ से ही 'संसदीय सरकार' बनाने पर रहा, जबकि गांधीजी ने गाँव को बुनियादी इकाई मानकर 'संसदीय स्वराज' या 'हिंद स्वराज' की कल्पना की थी। संविधान सभा ने गांधीजी के स्वराज या समाज–रचना में कोई रुचि नहीं दिखाई, यहाँ तक कि कभी उसकी चर्चा भी नहीं की! परिणाम यह हुआ कि ''ढाई वर्ष के परिश्रम से जो संविधान बना, उसमें अमेरिका के राष्ट्रपति और इंग्लैण्ड की संसद (जिसे गांधीजी बाँझ व वेश्या कहते रहे) के मेल के सिवाय कुछ खास नहीं था। संघीय ढांचा भी वही रखा लिया गया, जो वर्षों पहले 'साइमन कमीशन' ने बनाया था। यह तो हुआ ही, प्रशासन का पूरा ढांचा जैसा अंग्रेजी जमाने में था, वैसा ही रहने दिया गया।''[12]

भारत की परम्परा, प्रतिभा और परिस्थिति के अनुसार संविधान और प्रशासन का कोई भारतीय ढंग और ढांचा अपनाया जा सकता था, यह सवाल ही नहीं उठा। किसी काम नहीं आये गांधीजी के विचार और कार्य, स्वयं कांग्रेस के 25 वर्षों के 'स्वराज' सम्बन्धी प्रस्ताव। 'हिंद स्वराज' की अवधारणा वर्तमान समय में प्रासंगिक है या नहीं, यह अहम प्रश्न है। मेरे हिसाब से– आज की सत्ता की राजनीति जिस डगर पर चली गई है, अगर उसको रचनात्मक मोड़ देना है तो 'हिंद स्वराज' की अवधारणा प्रासंगिक है और अगर वर्तमान परिस्थिति को ज्यों का त्यों बरकरार रखने की प्रवृत्ति प्रबल है तो यह अवधारणा अप्रासंगिक है।

सन्दर्भ ग्रथं

1. गाँधी : व्यक्तित्व और विचार– ज्ञानेंद्र रावत (सं.), श्री नटराज प्रकाशन दिल्ली, सं. 2006, पष्ठ–209
2. वही, पृष्ठ– 211
3. गाँधी : समय, समाज और संस्कृति– विश्णु प्रभाकर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2000, पृष्ठ–50
4. वही, पृष्ठ– 117–118
5. हिंद स्वराज– महत्मा गाँधी, शिक्षा भारती, नई दिल्ली, सं. 2013, पष्ठ–27
6. वही, पृष्ठ–30
7. वही, पृष्ठ–28
8. गाँधी : समय, समाज और संस्कृति– विष्णु प्रभाकर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2000, पृष्ठ–61
9. हिंद स्वराज– महत्मा गाँधी, शिक्षा भारती, नई दिल्ली, सं. 2013, पृष्ठ–63
10. वही, पृष्ठ–79
11. गाँधी : व्यक्तित्व और विचार– ज्ञानेंद्र रावत (सं.), श्री नटराज प्रकाशन दिल्ली, सं. 2006, पृष्ठ–61
12. 12– वही, पृष्ठ–56